लोक संरक्षित क्षेत्र चैतुरगढ़ वनमण्डल कटघोरा (जिला-कोरबा) छत्तीसगढ़ का अध्ययन

✧ शैलेश सोनी ★ डॉ. के.आर. साहू ★★ श्रीमती योगिता सोनी

गरीब एक जटिल समस्या है गरीब व्यक्ति अजीविका के लिये प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर रहता है इन्हीं प्राकृतिक संसाधनों की कमी गरीबी की समस्या को और जटिल बना देती है। भारतवर्ष में कुल जनसंख्या का 44 प्रतिशत व्यक्ति, छत्तीसगढ़ में 37 प्रतिशत गरीबी रेखा के नीचे है।

लोक संरक्षित कार्यक्रम जनता के द्वारा चलाया जाता है और केवल शासन की भूमिका प्रदायक की होती है। वनमण्डल कटघोरा जिला कोरबा पाली एवं चैतमा में आने वाले परिक्षेत्र को लोकसंरक्षित क्षेत्र के रूप में चयन किया गया है इसमें कुल सम्मिलित को लोक संरक्षित क्षेत्र के रूप में चयन किया गया है इसमें कुल सम्मिलित को लोक संरक्षित क्षेत्र के रूप में चयन किया गया है इसमें कुल सम्मिलित कक्ष 14, कुल रकबा 11457.645 हेक्टेयर है एवं कोर एरिया 5404.469 हेक्टेयर, बफर एरिया 6047,. 266 हेक्टेयर एवं बाह्य स्थलीय संरक्षण क्षेत्र 14,000, अन्तः स्थलीय उपचार क्षेत्र 5,000 हेक्टेयर है। कुल सम्मिलित समितियाँ–11 ग्राम वन समिति/वन सुरक्ष समिति है।

परिचय–लोक संरक्षित क्षेत्र की अवधारणा एक ऐसी जनकेन्द्रित व्यवस्था विकसित करने के उद्देश्य से बनायी गयी है ताकि यह क्षेत्र गरीब जनता के संसाधन निर्मित होकर गरीबी उन्मूलन तथा अच्छे जीवन का रूपरेखा बना सकें।

गरीब एक जटिल समस्या है। बड़ी आर्थिक समस्याओं के अलावा प्राकृतिक संसाधनों तक गरीब की पहुँच सीमित होने के कारण गरीब व्यक्ति आर्थिक परिस्थितियों के सामने विवश हो जाता है गरीब व्यक्ति अजीविका के लिये प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भरता इन संसाधनों की कमी को जन्म देता है और प्राकृतिक संसाधनों की कमी गरीब की समस्या को और जटिल बना देती है यह समस्या ऐसे पिछड़े क्षेत्रों में अधिक मुखर होकर सामने आती है जहाँ सामुदायिक सम्पदा का वितरण उस पर आश्रित व्यक्तियों के बीच एक समान ना हो।

लोक संरक्षित क्षेत्र चैतुगढ़ अपनी सुरभ्य वन आच्छादित घाटियों, दुर्गम पहाड़ की वादियों में न केवल प्राकृतिक जल स्त्रोतों को समेटे हुऐ है बल्कि बहुमूल्य वन औषधी वन्यजीव भी है।

प्रमुख उद्देश्य–जैविक रूप से सम्पन्न प्राकृतिक वन जो आदिवासी जनजीवन के प्रमुख सांस्कृतिक आधार है जिसको सुरक्षित रखकर राज्य के जैव सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित रखना है इनके प्रमुख उद्देश्य निम्न है–

(1) वनवासियों एवं उनके पारम्परिक ज्ञान का सर्वोच्च मान सम्मान संसाधन सुरक्षा में सहयोग एवं भागीदारी। (2) समुदाय के सहयोग से वनों हेतु सूक्ष्म प्रबंधन योजना विकसित करना। (3) प्राकृतिक संसाधनों के आंकलन हेतु विशिष्ट विधि विकसित करना। (4) वनों एवं अन्य प्राकृतिक संसाधनों का विनाश विहीन दोहन करना। (5) लघु वनोपज संक्षरण को बढ़ावा देकर वनवासियों को आर्थिक विकास करना।

विधि–लोक संरक्षित क्षेत्र चैतुरगढ़ न केवल जैव विविधता बल्कि ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक महत्व के स्थल चैतुरगढ़ के लिये प्रसिद्ध है। वर्षा ऋतु एवं शरद ऋतु में इस क्षेत्र की सुन्दरता को देखकर पंचमढ़ी एवं हिमालय प्रदेशों जैसी लगती है।

भौगोलिक स्थिति–चैतुरगढ़ के लिये पाली से मार्ग जाता है। पाली बिलासपुर–अम्बिकापुर राज्य मार्ग से 50 कि. मी. की दूरी पर स्थित है पाली से चैतुगढ़ की दूरी 30 कि.मी. है। चैतुरगढ़ सर्वे आफ इंडिया के टोपोशीट नं. 64जे./7 में 8206′51′′ अक्षांश एवं 22030′13′′ देशांतर पर स्थित है।

क्षेत्र का इतिहास–पुरातत्व विभाग एवं गजेटियर के सूत्रों से प्राप्त जानकारी के अनुसार चैतुरगढ़ का किला कल्चुरी शासन काल में राजा पृथ्वीदेव प्रथम के समय 821 ईस्वी तथ 1069 ईस्वी के मध्य निर्मित कराया गया था। कल्चुरी संरचना एवं भयावह भौगोलिक स्थिति के कारण प्रख्यात पुरात्वशास्त्री श्री बेगलर ने अपनी किताब में इसे देश के अभेद्य किलों में शामिल किया है।

चैतुरगढ़ में सम्मिलित वन क्षेत्र

लोक संरक्षित क्षेत्र हेतु इस वन क्षेत्र का लगभग 11415.147 है। क्षेत्र चयनित किया गया है जिसमें से 5404.497 हेक्टेयर क्षेत्र कोर एरिया एवं 6047.266 हेक्टेयर क्षेत्र बफर एरिया है कोर एरिया में 17 वन कक्ष व बफर एरिया में 14 वन कक्ष सम्मिलित है। कोर एरिया एवं बफर एरिया के संरक्षण एवं संवर्द्धन हेतु 11 ग्राम वन समिति व वन सुरक्षा समिति को इस परियोजना का भागीदार बनाया गया है।

तथ्यों का विश्लेषण–लोक संरक्षित क्षेत्र को गरीब समुदाय विकास, गरीबी उन्मूलन और अच्छे भविष्य निर्माण के लिये विकसित किया जा रहा है। जो की प्राकृतिक संसाधनों से मिलने वाले भौतिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं पारिस्थितिकीय लाभ को मानव समाज विशेष कर गरीब समुदाय को अधिक सार्थक रूप से उपलब्ध करायेंगे। इसके अन्तर्गत निम्न प्रमुख कार्य किये जाते हैं।

(अ) स्थलीय संवर्द्धन–सम्पूर्ण कोर एरिया को पॉच भागों में बॉट कर प्रतिवर्ष लगभग 1000 हेक्टेयर क्षेत्र को वन औषधि संरक्षण एवं संवर्द्धन हेतु चिन्हित किया गया है। समस्त क्षेत्र को चराई एवं आग से शत् प्रतिशत सुरक्षा

✧ प्रयोगशाला तकनीशियन, ग्रामीण प्रौद्योगिकी एवं सामाजिक विकास विभाग, गुरू घासीदास विश्वविद्यालय बिलासपुर
★ सहायक प्राध्यापक प्राणीशास्त्र, शास.ई.राघवेन्द्र राव पी.जी. विज्ञान महाविद्यालय, बिलापसुर
★★ शोध छात्रा, गुरू घासी दास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

हेतु आसपास के ग्राम वन समिति/वन सुरक्षा समिति के सदस्यों का सक्रिय सहयोग लिया जाता है। क्षेत्र की सुरक्षा हेतु परियोजना में प्रति हेक्टेयर रूपये 200/– की सुरक्षा निधि ग्राम वन समिति/वन सुरक्षा समिति को दिये जाने का प्रावधन है। कोर एरिया के सीमांकन पश्चात् प्रत्येक वर्ष के लिये जाने वाले क्षेत्र में ग्रिड पाईंट सर्वेक्षण करके प्राकृतिक रूप से उपलब्ध वनोषधियों की गणना की जावेगी व अभिलेखित किया जायेगा।

(ब) बाह्य स्थलीय संवर्द्धन–लोक संरक्षित क्षेत्र के दूसरे घटक बाह्य स्थलीय संवर्द्धन हेतु लगभग 14 हेक्टेयर क्षेत्र का चयन ग्राम डोंगानाला पाली से 7कि.मी. में चयनित किया गया है इस क्षेत्र में वनौषधि के पौधे तैयार किये जाते हैं इन्हें स्थलीय क्षेत्र में व आमजनता के लिये भी रोपण हेतु उपलब्ध कराया जाता है।

प्रसंरकरण–लोक संरक्षित क्षेत्र परियोजना के अन्तर्गत इसके अतिरिक्त वनौषधियों से दवा बनाने हेतु आवश्यक प्रसंस्करण उपकरणों की स्थापना ग्राम डोंगानाला में किया गया है ताकि स्थानीय लोगों को स्थानीय रूप में पाये जाने वाली वनौषधियों से विभिन्न दवा बनाने की जानकारी दी जा रही है।

इको टूरिज्म–लोक संरक्षित क्षेत्र चैतुरगढ़ को इको टूरिज्म को ध्यान में रखते हुए इसे पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया गया है परियोजना से मिलने वाली राशि से यहाँ आने वाले पर्यटकों हेतु सुविधाओं के विकास में कार्य किये गये है। इससे यहाँ आने वाले पर्यटकों की यात्रा धार्मिक, पुरातात्विक, वन सौन्दर्य एवं वन औषधि ज्ञानवर्द्धक जानकारियों से परिपूर्ण साबित होगी। यह आम जनता को वनों के सरंक्षण व संवर्द्धन के प्रति चेतना एवं जागरूकता लाने में सहायक सिद्ध होगी।

निष्कर्ष–लोक संरक्षित ऐसी योजना है जिसे वन विभाग ग्राम वन समिति व वन सुरक्षा समिति के माध्यम से संचालित कर रहा है। इससे न केवल वन क्षेत्र में पायी जाने वाली लुप्त प्रायः वनौषधियों का संरक्षण एवं संवर्द्धन होगा बल्कि प्राचीन दुष्प्रभाव रहित उपचार पद्धति को पुर्नजीवित करने में अत्यन्त सहायक होगा। लोक संरक्षित क्षेत्र परियोजना की सफलता में सर्वाधिक महत्व "लोक" का है, जिसके सक्रिय भागीदारी/सहयोग में ही परियोजना की सफलता निहित है। उपरोक्त अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि लोक संरक्षित क्षेत्र को और अधिक विकसित बनाने के लिये निम्न सुझाव पर ध्यान देना जरूरी हैः–

(1) स्थलीय संवर्द्धन कार्य हेतु वनवासियों को उन्नत प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण दिया जाना चाहिये।

(2) औषधी पौधे की आग/चराई से बचाना चाहिये।

(3) वन क्षेत्रों में पाये जाने वाली लुप्त प्रायः वनौषधियों का संरक्षण एवं संवर्द्धन करना चाहिये।

(4) इको टूरिज्म केन्द्र को और अधिक विकसित किया जाना चाहिये।